HAZRATE SAYYIDUNA TALHA BIN UBAIDULLAH (HINDI)

सिल्सिलए फ़ैज़ाने अ़शरए मुबश्शरह के पांचवें सहाबी

हज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह

* बसरा का राहिब और कुरैशी ताजिर 01
* नामों की तासीर 09
* फ़िरिश्ते परों पर उठा लेते 34
* बा अदब बा नसीब 39
* एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में 44

म-दनी चेनल देखते रहिये

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ؕ بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ؕ

किताब पढ़ने की दुआ़

अज़ : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी** र-ज़वी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ

दीनी किताब या इस्लामी सबक़ पढ़ने से पहले ज़ैल में दी हुई दुआ़ पढ़ लीजिये اِنْ شَآءَاللّٰہ عَزَّوَجَلَّ जो कुछ पढ़ेंगे याद रहेगा। दुआ़ येह है :

اَللّٰھُمَّ افْتَحْ عَلَیْنَا حِکْمَتَکَ وَانْشُرْ
عَلَیْنَا رَحْمَتَکَ یَا ذَا الْجَلَالِ وَالْاِکْرَام

तरजमा : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हम पर इ़ल्म व ह़िक्मत के दरवाज़े खोल दे और हम पर अपनी रह़मत नाज़िल फ़रमा ! ऐ अ़-ज़मत और बुज़ुर्गी वाले। (المُستطرَف ج١ ص٤٠ دارالفکر بیروت)

नोट : अव्वल आख़िर एक एक बार दुरूद शरीफ़ पढ़ लीजिये।

त़ालिबे ग़मे मदीना
व बक़ीअ़
व मग़्फ़िरत 13 शव्वालुल मुकर्रम 1428 हि.

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

येह रिसाला (**ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ)

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या (दा'वते इस्लामी) ने **उर्दू** ज़बान में पेश किया है।

मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) ने इस रिसाले को **हिन्दी** रस्मुल ख़त़ में तरतीब दे कर पेश किया है, इस में अगर किसी जगह कमी बेशी पाएं तो मजलिसे तराजिम को (ब ज़रीअ़ए मक्तूब, ई-मेइल) मुत्त़लअ़ फ़रमा कर सवाब कमाइये।

राबित़ा : मजलिसे तराजिम (दा'वते इस्लामी) मक-त-बतुल मदीना
सिलेक्टेड हाउस, अलिफ़ की मस्जिद के सामने,
तीन दरवाज़ा, अह़मदआबाद, गुजरात।
MO. 09374031409 E-mail : maktabahind@gmail.com

सिल्सिलए फ़ैज़ाने अ़-श-रए मुबश्शरह के पांचवें सह़ाबी

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ

पेशकश

मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या

(दावते इस्लामी)

शो'बए बयानाते म-दनी चेनल

नाशिर

मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद

الصلوة و السلام علیک یا رسول الله و علیٰ اٰلك و اصحبك یا حبیب الله

नाम किताब : हज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह

पेशकश : **मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**

(शो'बए बयानाते म-दनी चेनल)

सिने त़बाअ़त : **12 शा'बानुल मुअ़ज़्ज़म सि. 1432 हि. ब मुत़ाबिक़**

15 जूलाई सि. 2011 ई.

नाशिर : **मक-त-बतुल मदीना अह़मदआबाद**

तस्दीक़ नामा

तारीख़ : 15 रबीउ़स्सानी 1432 हि. ह़वाला : 169

الحمد لله رب العلمين والصلوة والسلام على سيد المرسلين وعلى اله واصحابه اجمعين

तस्दीक़ की जाती है कि किताब

"ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह"

(मत़्बूआ़ मक-त-बतुल मदीना) पर मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल की जानिब से नज़रे सानी की कोशिश की गई है। मजलिस ने इसे अ़क़ाइद, कुफ़्रिय्या इ़बारात, अख़्लाक़ियात, फ़िक़्ही मसाइल और अ़-रबी इ़बारात वग़ैरा के ह़वाले से मक्दूर भर मुला-ह़ज़ा कर लिया है, अलबत्ता कम्पोज़िंग या किताबत की ग़-लत़ियों का ज़िम्मा मजलिस पर नहीं।

मजलिसे तफ़्तीशे कुतुबो रसाइल (दा'वते इस्लामी)

20-03-2011

E-mail : ilmia26@dawateislami.net

म-दनी इल्तिजा: किसी और को येह किताब छापने की इजाज़त नहीं

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

म-दनी चेनल के सिल्सिले ''फ़ैज़ाने सह़ाबए किराम'' के चौदह ह़ुरूफ़ की निस्बत से इस रिसाले को पढ़ने की ''14 निय्यतें''

फ़रमाने मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم : ''نِيَّةُ الْمُؤْمِنِ خَيْرٌ مِّنْ عَمَلِهٖ۝'' मुसल्मान की निय्यत उस के अ़मल से बेहतर है।''

(المعجم الكبير للطبراني، الحديث:٢٤٩٥، ج٦، ص٥٨١)

दो म-दनी फूल :

﴾1﴿..... बिग़ैर अच्छी निय्यत के किसी भी अ़-मले ख़ैर का सवाब नहीं मिलता।

﴾2﴿..... जितनी अच्छी निय्यतें ज़ियादा, उतना सवाब भी ज़ियादा।

﴾1﴿ हर बार ह़म्द व ﴾2﴿ सलात और ﴾3﴿ तअ़व्वुज़ व ﴾4﴿ तस्मिय्या से आग़ाज़ करूंगा (इसी सफ़ह़े पर ऊपर दी हुई दो अ़-रबी इ़बारात पढ़ लेने से चारों निय्यतों पर अ़मल हो जाएगा) ﴾5﴿ ह़त्तल वस्अ़ इस का बा वुज़ू और ﴾6﴿ क़िब्ला रू मुत़ा-लआ़ करूंगा ﴾7﴿ क़ुरआनी आयात और ﴾8﴿ अह़ादीसे मुबा-रका की ज़ियारत करूंगा ﴾9﴿ जहां जहां ''अल्लाह'' का नामे पाक आएगा वहां عَزَّوَجَلَّ और ﴾10﴿ जहां जहां ''सरकार'' का इस्मे मुबारक आएगा वहां صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पढ़ूंगा ﴾11﴿ शर-ई मसाइल सीखूंगा ﴾12﴿ अगर कोई बात समझ न आई तो उ़-लमा से पूछ लूंगा ﴾13﴿ सीरते सह़ाबा पर अ़मल की कोशिश करूंगा ﴾14﴿ किताबत वग़ैरा में शर-ई ग़-लत़ी मिली तो नाशिरीन को तह़रीरी त़ौर पर मुत्त़लअ़ करूंगा (मुसन्निफ़ या नाशिरीन वग़ैरह को किताबों की ग़लात़ सिर्फ़ ज़बानी बताना ख़ास मुफ़ीद नहीं होता)

फ़ेहरिस

अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या का तआ़रुफ़	5	सय्यिदुना त़ल्हा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ के अल्क़ाब	30
पहले इसे पढ़ लीजीये	7	सय्यिदुना त़ल्हा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ के फ़ज़ाइल	32
दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत	9	सय्यिदुना जिब्राईल علیہ السلام का सलाम	33
बसरा का राहिब और कुरैशी ताजिर	9	जन्नती पड़ोसी	33
कुरैशी ताजिर का तआ़रुफ़	13	जन्नत वाजिब हो गई	34
नाम व नसब	13	शहादत की ख़ुश ख़बरी	35
हुल्या मुबारक	13	ख़ानदाने मुस्त़फ़ा से तअ़ल्लुक़	35
अम्बियाए किराम से निस्बत	14	हिजरत	36
अच्छे नाम रखना बच्चों का ह़क़ है	15	अख़ुव्वत व भाईचारा	37
नाम कैसे रखे जाएं ?	15	जा निसारी व वफ़ा शिआ़री	38
नामों की तासीर	17	माले दुन्या के साथ अज्रे आख़िरत भी	39
ह़क़ीक़ी तिजारत	19	शुजाअ़त व बहादुरी	41
अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तिजारत का नफ़्अ़	21	फ़िरिश्ते परों पर उठा लेते	42
सय्यिदुना त़ल्हा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ का यौमिय्या नफ़्अ़	22	शुजाअ़त के सत्तर से ज़ाइद तमग़े	44
दुन्या की बे वुक़्अ़ती	23	नज़्र पूरी करने वाले	45
मह़ब्बत की कुन्जी	23	बा अदब बा नसीब	46
सख़ावत, ज़ोह्द की कुन्जी है	24	आ़जिज़ी व इन्किसारी	48
सय्यिदुना त़ल्हा رَضِیَ اللہُ تعالٰی عنہ की सख़ावत	24	रिवायते ह़दीस में एह़तियात़	49
बिन मांगे देते	26	सफ़रे आख़िरत	50
सय्यिदुना त़ल्हा का तवक्कुल	26	सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा का ख़िराजे तह़सीन	51
भूका शेर	27	क़ातिल को जहन्नम की ख़बर	51
मुर्ग़ी का तवक्कुल	28	एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में	51

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعٰلَمِيْنَ وَالصَّلٰوةُ وَالسَّلَامُ عَلٰى سَيِّدِ الْمُرْسَلِيْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ ط بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ ط

अल मदीनतुल इल्मिय्या

अज़् : शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल **मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार** क़ादिरी र-ज़वी ज़ियाई دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ عَلٰى اِحْسَانِهٖ وَ بِفَضْلِ رَسُوْلِهٖ صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم

तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक **''दा'वते इस्लामी''** नेकी की दा'वत, एह़याए सुन्नत और इशाअ़ते इ़ल्मे शरीअ़त को दुन्या भर में आ़म करने का अ़ज़्मे मुसम्मम रखती है, इन तमाम उमूर को ब ह़ुस्नो ख़ूबी सर अन्जाम देने के लिये मु-तअ़द्दद मजालिस का क़ियाम अ़मल में लाया गया है जिन में से एक मजलिस **''अल मदी-नतुल इल्मिय्या''** भी है जो दा'वते इस्लामी के उ़-लमा व मुफ़्तियाने किराम كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تعالیٰ पर मुश्तमिल है, जिस ने ख़ालिस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती काम का बीड़ा उठाया है। इस के मुन्दरिजए ज़ैल छ शो'बे हैं :

(1) शो'बए कुतुबे आ'ला ह़ज़रत رَحْمَةُ اللّٰهِ تَعَالٰى عَلَيْه
(2) शो'बए दर्सी कुतुब
(3) शो'बए इस्लाह़ी कुतुब
(4) शो'बए तराजिमे कुतुब
(5) शो'बए तफ़्तीशे कुतुब
(6) शो'बए तख़्रीज

''**अल मदी-नतुल इ़ल्मिय्या**'' की अव्वलीन तरजीह़ सरकारे आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, अ़ज़ीमुल ब-र-कत, अ़ज़ीमुल मर्तबत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, ह़ामिये सुन्नत, माह़िये बिदअ़त, आ़लिमे शरीअ़त, पीरे त़रीक़त, बाइ़से ख़ैरो ब-र-कत, ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना अलह़ाज अल ह़ाफ़िज़ अल क़ारी अश्शाह इमाम अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن की गिरां मायह तसानीफ़ को अ़स्रे ह़ाज़िर के तक़ाज़ों के मुत़ाबिक़ ह़त्तल वुस्अ़ सह्ल उस्लूब में पेश करना है। तमाम इस्लामी भाई और इस्लामी बहनें इस इ़ल्मी, तह़क़ीक़ी और इशाअ़ती म-दनी काम में हर मुम्किन तआ़वुन फ़रमाएं और मजलिस की त़रफ़ से शाएअ़ होने वाली कुतुब का ख़ुद भी मुत़ा-लआ़ फ़रमाएं और दूसरों को भी इस की तरग़ीब दिलाएं।

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ''**दा'वते इस्लामी**'' की तमाम मजालिस ब शुमूल ''**अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या**'' को दिन ग्यारहवीं और रात बारहवीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए और हमारे हर अ़-मले ख़ैर को ज़ेवरे इख़्लास से आरास्ता फ़रमा कर दोनों जहां की भलाई का सबब बनाए। हमें ज़ेरे गुम्बदे ख़ज़रा शहादत, जन्नतुल बक़ीअ़ में मदफ़न और जन्नतुल फ़िरदौस में जगह नसीब फ़रमाए। اٰمِین بِجاہِ النَّبِیِّ الْاَمین صَلَّی اللہ تعالیٰ علیہ واٰلہٖ وسلَّم

र-मज़ानुल मुबारक 1425 हि.

पहले इसे पढ़ लीजिये

आ़लमे ज़ीस्त पर हर त़रफ़ मायूसी और मह़रूमी के अंधेरे छाए हुए थे, इन्सानिय्यत अख़्लाक़ी पस्ती का शिकार थी कि आ़लम के नजात दिहन्दा, मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم तशरीफ़ लाए और उन तमाम ज़न्जीरों को काट डाला जिन में इन्सानिय्यत बुरी त़रह़ जकड़ी हुई थी और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के फ़ैज़े तरबिय्यत के असर से इन्सानिय्यत अख़्लाक़ी पस्तियों से निकल कर आस्मान की बुलन्दियों को छूने लगी।

आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपनी रात दिन की कोशिश से जो नियाज़ मन्द तय्यार किये वोह आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत और इ़श्क़ में इतने सरशार और वारफ़्ता थे कि अपने आक़ा के इशारे पर अपना सब कुछ क़ुरबान कर देना सब से बड़ी सआ़दत समझते थे। हु़ज़ूरे अकरम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के हर हु़क्म की ता'मील और पैरवी उन की फ़ित़रते सानिया बन चुकी थी। और शम्ए़ रिसालत के इन परवानों ने अपनी बे मिसाल मह़ब्बत का सुबूत देते हुए जब बीबी आमिना के लाल, रसूले बे मिसाल صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर अपनी जानें निसार कीं तो रब्बे ज़ुल जलाल عَزَّوَجَلَّ ने उन्हें अपनी रिज़ा का मुज़्दए जां फ़िज़ा यूं सुनाया :

رَضِیَ اللّٰہُ عَنْھُمْ وَ رَضُوْا عَنْہُ ط
(پ۲۸، المجادلۃ:۲۲)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : अल्लाह उन से राज़ी और वोह **अल्लाह** से राज़ी।

मीठे मीठे इस्लामी भाइयो ! फ़ैज़े नुबुव्वत से तरबिय्यत पाने और रब عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा का मुज़्दा ह़ासिल करने वाली इन हस्तियों ने इस्लाम की तरवीज व इशाअ़त के लिये जो क़ुरबानियां दीं इन का ह़क़ीक़ी सिला तो यक़ीनन उन्हें आख़िरत में मिलेगा मगर कुछ हस्तियां

ऐसी भी थीं जिन्हें दुन्या में ही जन्नत की नवीदे पुर बहार सुनाई गई। यूं तो मुख़्तलिफ़ अवक़ात में जन्नत की बिशारत पाने वाले सह़ाबए किराम कई हैं मगर दस ऐसे जलीलुल क़द्र और ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان हैं जिन को आप صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मस्जिदे न-बवी के मिम्बर शरीफ़ पर खड़े हो कर एक साथ नाम ले कर जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी सुनाई। इन ख़ुश नसीबों को **''अ़-श-रए मुबश्शरह''** के नाम से याद किया जाता है। इन के अस्माए गिरामी येह हैं : ﴾1﴿ ह़ज़रत अबू बक्र सिद्दीक़ ﴾2﴿ ह़ज़रत उ़मर फ़ारूक़ ﴾3﴿ ह़ज़रत उ़स्मान ग़नी ﴾4﴿ ह़ज़रत अ़लिय्युल मुर्तज़ा ﴾5﴿ ह़ज़रत त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह ﴾6﴿ ह़ज़रत ज़ुबैर बिन अ़व्वाम ﴾7﴿ ह़ज़रत अ़ब्दुर्रह़मान बिन औ़फ़ ﴾8﴿ ह़ज़रत सा'द बिन अबी वक़्क़ास ﴾9﴿ ह़ज़रत सई़द बिन ज़ैद ﴾10﴿ ह़ज़रत अबू उ़बैदा बिन अल जर्राह़। عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان

(سنن الترمذی، کتاب المناقب، مناقب عبدالرحمن بن عوف، الحدیث:۳۷۶۸، ج۲، ص۲۱۶)

اَلۡحَمۡدُ لِلّٰه عَزَّوَجَلَّ तब्लीग़े क़ुरआनो सुन्नत की आ़लमगीर ग़ैर सियासी तह़रीक दा'वते इस्लामी के शो'बए म-दनी चेनल पर उम्मते मुस्लिमा को दरबारे नुबुव्वत के इन चमक्ते सितारों की सीरत से आगाह करने के लिये एक सिल्सिला जारी व सारी है। मजलिसे अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या के शो'बए ''बयानाते म-दनी चेनल'' के म-दनी उ़-लमा كَثَّرَهُمُ اللّٰهُ تَعَالٰى की अन्थक काविशों के सबब पेशे नज़र रिसाला इसी सिल्सिले की एक कड़ी है। **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ''दा'वते इस्लामी'' की तमाम मजालिस ब शुमूल **अल मदीनतुल इ़ल्मिय्या** को दिन 11वीं रात 12वीं तरक़्क़ी अ़त़ा फ़रमाए।

اٰمِين بِجَاهِ النَّبِيِّ الۡاَمِين صَلَّى اللّٰه تعالٰى عليه واٰله وسلَّم

اَلْحَمْدُ لِلّٰہِ رَبِّ الْعٰلَمِیْنَ وَالصَّلٰوۃُ وَالسَّلَامُ عَلٰی سَیِّدِ الْمُرْسَلِیْنَ
اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰہِ مِنَ الشَّیْطٰنِ الرَّجِیْمِ ط بِسْمِ اللّٰہِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِیْمِ ط

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ

दुरूद शरीफ़ की फ़ज़ीलत

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जिस ने मुझ पर दिन भर में एक हज़ार मर्तबा दुरूदे पाक पढ़ा वोह उस वक़्त तक नहीं मरेगा जब तक जन्नत में अपनी जगह न देख ले।'' (اَلتَّرغیب وَالتَّرھیب رقم الحدیث ۲۴۸۳ ج۲ ص۴۹۹)

صَلُّوا عَلَی الْحَبِیْب! صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلٰی مُحَمَّد

बसरा का राहिब और कु़रैशी ताजिर

सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के इज़्हारे नुबुव्वत से क़ब्ल अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के क़बीले बनू तैम का एक ताजिर तिजारत की ग़रज़ से बसरा गया। जब बाज़ार पहुंचा तो क्या देखता है कि एक राहिब अपने इ़बादत ख़ाने में मौजूद लोगों से कह रहा था : सर ज़मीने अ़रब से आने वाले इन मुअ़ज़्ज़ज़ ताजिरों से ज़रा येह तो मा'लूम करो क्या इन में कोई ह़रम का रहने वाला भी है ? तो वोह मुअ़ज़्ज़ज़ कु़रैशी ताजिर आगे बढ़

कर बोला : जी हां ! मैं ह़रम का रहने वाला हूं। राहिब को मा'लूम हुवा तो उस ने बड़ी बेताबी से उस कुरैशी जवान से पूछा : ''क्या आप के हां अह़मद नामी किसी हस्ती का ज़ुहूर हुवा है ?'' ताजिर ने पूछा : ''येह कौन हैं ?'' तो राहिब ने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का तआ़रुफ़ कुछ यूं कराया : ''येह ह़ज़रत अ़ब्दुल मुत्तलिब के नूरे नज़र ह़ज़रत **अ़ब्दुल्लाह** के लख़्ते जिगर हैं । इन के ज़ुहूर का माहे मुबारक येही है, वोह आख़िरी नबी हैं और इन का ज़ुहूर सर ज़मीने ह़रम (मक्कतुल मुकर्रमा) से होगा, फिर वोह उस जगह हिजरत करेंगे जहां की ज़मीन तो पथरीली और शोर ज़दा होगी मगर वहां खजूरों के बाग़ात कसरत से होंगे, तुम्हें तो उन की बारगाह में फ़ौरन ह़ाज़िर होना चाहिये ।''

वोह कुरैशी ताजिर फ़रमाते हैं कि राहिब की बातें मेरे दिल में घर कर गईं और मैं फ़ौरन वहां से चल पड़ा यहां तक कि मक्कए मुकर्रमा पहुंच कर ही दम लिया । मक्का शरीफ़ पहुंचते ही लोगों से पूछा कि कोई नई ख़बर है ? तो उन्हों ने बताया : हां ! मुह़म्मद बिन **अ़ब्दुल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم जिन्हें हम अमीन के तौ़र पर जानते हैं, ने नुबुव्वत का दा'वा किया है और इब्ने अबी क़ह़ाफ़ा (या'नी अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ) उन पर ईमान भी ले आए हैं । फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रत अबू बक्र رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा

और पूछा : ''क्या आप नबिय्ये पाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर ईमान ले आए हैं ?'' उन्हों ने जवाब दिया : ''हां ! और चलो तुम भी इन की बारगाह में ह़ाज़िर होने में देर मत करो क्यूं कि वोह ह़क़ की दा'वत देते हैं।'' ताजिर का दिल राहिब की बातों से इस्लाम की त़रफ़ माइल हो चुका था। आ़शिक़े अक्बर, सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की नेकी की दा'वत से भरपूर बातें सुन कर मज़ीद मु-तअस्सिर हुवा और उस ने राहिब की तमाम बातें भी बता दीं। चुनान्चे, अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ अपने क़बीले के उस नौ जवान ताजिर को ले कर दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में ह़ाज़िर हुए और बसरा के राहिब और आ़शिक़े अक्बर की बातों से मु-तअस्सिर होने वाला येह क़ुरैशी ताजिर आख़िर कार सरकारे वाला तबार, बे कसों के मददगार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के दामने बा ब-र-कत से वाबस्ता हो कर मुसल्मान हो गया और जब इस ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को राहिब की बातें बताईं तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم बहुत ख़ुश हुए।

(دلائل النبوة للبيهقي، باب من تقدم اسلامه من الصحابة، ج٢، ص١٦٦ ـ والمستدرك، كتاب معرفة الصحابة، ذكر مناقب طلحة بن عبيد الله رضى الله تعالى عنه، ج٤، ص٤٤٩)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! कुरैशी सरदार नौफ़ल बिन ख़ुवैलद को कुरैश का शेर कहा जाता था, येह कुरैशी सरदार दीने इस्लाम का परचम थामने वालों पर इस क़दर ज़ुल्मो सितम ढाता कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अपने प्यारे रब्बे करीम عَزَّوَجَلَّ से इस के शर से मह़फ़ूज़ रहने के लिये दुआ़ की : ऐ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ! हमें इस के शर से मह़फ़ूज़ फ़रमा। चुनान्चे, अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ और इस कुरैशी ताजिर ने इस्लाम क्या क़बूल किया इस ज़ालिम सरदार ने इन ह़ज़रात पर ज़ुल्म की इन्तिहा कर दी। उस ने इन दोनों को एक ही रस्सी में बांधने का हुक्म दिया ताकि येह ह़ज़रात ख़ुदाए वह़्दहू ला शरीक की इ़बादत न कर सकें और रस्सी बांधने वाला भी कोई ग़ैर न था बल्कि उस कुरैशी ताजिर का अपना सगा भाई (उ़स्मान बिन **उ़बैदुल्लाह**) था। इन ह़ज़रात को एक ही रस्सी में बांधा तो इस लिये गया था कि येह इस्लाम से मुंह फैर लें मगर इन के पायए इस्तिक़्लाल में ज़र्रा बराबर फ़र्क़ न आया क्यूं कि दुश्मनाने इस्लाम ने ज़ाहिरी त़ौर पर इन ह़ज़रात के जिस्मों को रस्सी में बांध रखा था मगर इन के दिल **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की मह़ब्बत की डोर से बंधे हुए थे। फिर बा'द में येह दोनों ह़ज़रात **क़रीनैन** (दो साथी) के नाम से पुकारे जाते।

(دلائل النبوۃ للبیہقی، باب من تقدم اسلامہ من الصحابۃ،ج۲، ص۱۶۶ تا ۱۶۷ مفھوماً)

क़ुरैशी ताजिर का तआ़रुफ़

नाम व नसब :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ (मु–तवफ़्फ़ा 855 हि.) शर्हे सु–नने अबी दावूद में इन ताजिर का तआ़रुफ़ कुछ यूं बयान फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का नाम ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह बिन उ़स्मान क़ुरैशी तैमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ है और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की त़रह़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का सिल्सिलए नसब भी **सातवीं पुश्त** में (का'ब बिन मुर्रह पर) मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुबारक नसब से जा मिलता है।

(شرح سنن ابی داؤد للعینی، کتاب الصلوۃ، باب ما یستر المصلی، تحت الحدیث:٦٦٦، ج٣، ص٢٤٢)

हुल्या मुबारक :

इमाम ह़ाकिम رَحۡمَۃُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیۡہ ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ का हुल्या मुबारक लिखते हुए फ़रमाते हैं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की रंगत सुर्ख़ी माइल सफ़ेद थी, क़द मु–तवस्सित़ व दरमियाना था, सीना चौड़ा और शाने कुशादा थे। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ जब किसी त़रफ़ मुड़ते तो पूरे रुख़ से मु–तवज्जेह होते, ह़सीन चेहरे पर बड़ी ख़ूब सूरत बारीक सी नाक थी, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के पाउं बड़े थे

और बड़ी तेज़ी से चला करते थे।

(المستدرك، كتاب معرفة الصحابة، ذكر مناقب طلحة بن عبيد الله، ج٤، ص٤٤٩)

अत्त-बक़ातुल कुब्रा में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना **त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ आ़म त़ौर पर **उ़स्फ़ुर** (ज़र्द रंग की एक बूटी जिस से **कपड़े रंगे जाते** हैं) से रंगा हुवा **लिबास** ज़ैबे तन फ़रमाया करते थे।

(الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم٤٧ طلحة بن عبيدالله، ج٣، ص١٦٤)

अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام से निस्बत :

ह़ज़रते ज़ुबैर बिन अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने तमाम बेटों के नाम **अम्बियाए किराम** عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के नामों पर रखे।

(الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم٣٢ الزبير بن عوّام، ج٣، ص٧٤)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के ग्यारह **बेटे और चार बेटियां** थीं। बेटों के नाम येह हैं : ﴾1﴿ मुह़म्मद ﴾2﴿ इ़मरान[1] ﴾3﴿ **मूसा** ﴾4﴿ या'कूब ﴾5﴿ इस्माईल ﴾6﴿ इस्ह़ाक़ ﴾7﴿ज़ु-करिय्या ﴾8﴿ यूसुफ़ ﴾9﴿ ईसा ﴾10﴿ यह़या ﴾11﴿ सालेह़ رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن।

1..... इ़मरान नामी दो अफ़राद हैं। पहले ह़ज़रते मूसा عَلَیْہِ السَّلَام के वालिदे माजिद इ़मरान बिन **यस्हर** हैं और दूसरे ह़ज़रते ईसा عَلَیْہِ السَّلَام की वालिदए माजिदा ह़ज़रते मरयम के वालिद ह़ज़रते इ़मरान बिन मासान हैं। या'नी पहले नबी के बाप और दूसरे नबी के नाना हैं। इस के इ़लावा सरवरे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَاٰلِہٖ وَسَلَّم के चचा अबू त़ालिब का अस्ल नाम भी इ़मरान है।

अच्छे नाम रखना बच्चों का ह़क़ है :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सीरते मुबारक से पता चलता है कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के बरगुज़ीदा बन्दों के नाम पर अपने बच्चों के नाम रखना सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की सुन्नत है। और याद रखिये कि औलाद का वालिदैन पर येह ह़क़ है कि वोह अपने बच्चों का अच्छा नाम रखें। चुनान्चे,

हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है कि औलाद का वालिद पर येह ह़क़ है कि उस का अच्छा नाम रखे और अच्छा अदब सिखाए।

(کنزالعمال، کتاب النکاح، الحدیث:٤٥١٨٤، ج١٦، ص١٧٣)

नाम कैसे रखे जाएं ?

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 138 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, **"तरबिय्यते औलाद"** सफ़ह़ा 66 ता 67 पर है **: वालिदैन** को चाहिये कि बच्चे का अच्छा नाम रखें कि येह उन की त़रफ़ से अपने बच्चे के लिये सब से पहला और बुन्यादी तोह़फ़ा है जिसे वोह उ़म्र भर अपने सीने से लगाए रखता है यहां

तक कि जब मैदाने ह़श्र बपा होगा तो वोह इसी नाम से मालिके काएनात عَزَّوَجَلَّ के हुज़ूर बुलाया जाएगा जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू दरदा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि हुज़ूरे पाक, साह़िबे लौलाक, सय्याह़े अफ़्लाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''क़ियामत के दिन तुम अपने और अपने आबा के नामों से पुकारे जाओगे लिहाज़ा अपने अच्छे नाम रखा करो।''

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی تغیر الاسماء، الحدیث ٤٩٤٨، ج٤، ص٣٧٤)

इस ह़दीसे पाक से वोह लोग इ़ब्रत ह़ासिल करें जो अपने बच्चे का नाम किसी फ़िल्मी अदाकार या (مَعَاذَاللّٰہ) कुफ़्फ़ार के नाम पर रख देते हैं, इस से बद तरीन ज़िल्लत क्या होगी कि मुसल्मानों की औलाद को कल मैदाने महशर में काफ़िरों के नामों से पुकारा जाए।

हमारे मुआ़-शरे में बच्चे के नाम के इन्तिख़ाब की ज़िम्मादारी उ़मूमन किसी क़रीबी रिश्तेदार म-सलन दादी, फूफी, चचा वग़ैरा को सोंप दी जाती है और उ़मूमन मसाइले शरइ़य्या से ना बलद होने की वजह से वोह बच्चों के ऐसे नाम रख देते हैं जिन के कोई मआ़नी नहीं होते या फिर अच्छे मआ़नी नहीं होते, ऐसे नाम रखने से एह़तिराज़ किया जाए। अम्बियाए किराम عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام के अस्माए मुबा-रका और सह़ाबए किराम व ताबिई़ने उ़ज़्ज़ाम और औलियाए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن के नाम पर नाम रखने चाहिएं जिस का एक फ़ाएदा तो येह होगा कि बच्चे का अपने अस्लाफ़ से रूह़ानी तअ़ल्लुक़ क़ाइम हो जाएगा और दूसरा इन नेक हस्तियों से मौसूम होने की ब-र-कत से इस की ज़िन्दगी पर म-दनी अ-सरात मुरत्तब होंगे।

ह़ज़रते सय्यिदुना अबू वह्ब जु-शमी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी है कि नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर, दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''अम्बिया (عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام) के नामों पर नाम रखो।''

(سنن ابی داود، کتاب الادب، باب فی تغیر الاسماء، الحدیث: ٤٩٥٠، ج٤، ص٣٧٤)

नामों की तासीर :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! बा'ज़ अवक़ात कहा जाता है कि ''फ़ुलां इस्मे बा मुसम्मा है'' या'नी जैसा नाम वैसी उस की शख़्सिय्यत है। चुनान्चे,

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**बहारे शरीअ़त**'' ह़िस्सा सोलह सफ़ह़ा 244 पर **सदरुश्शरीअ़ह, बदरुत्त़रीक़ह** ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद अमजद अ़ली आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने एक ह़दीसे पाक नक़्ल फ़रमाई है कि सईद बिन **मुसय्यब** رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से मरवी, कहते हैं, मेरे दादा नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए। ह़ुज़ूर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने पूछा : तुम्हारा क्या नाम है ? उन्हों ने कहा : **ह़ज़्न**। फ़रमाया : तुम **सह्ल** हो। या'नी अपना नाम **सह्ल** रखो कि इस के मा'ना हैं नर्म और **ह़ज़्न** सख़्त को कहते हैं। तो उन्हों ने कहा कि जो नाम मेरे बाप ने रखा है, उसे नहीं बदलूंगा। सईद बिन **मुसय्यब** कहते हैं, इस का नतीजा येह हुवा कि

हम में अब तक सख़्ती पाई जाती है।

(صحيح البخاري، كتاب الادب، باب تحويل الاسم الى اسم احسن منه، الحديث: ٦١٩٣، ص٥٢٢)

और एक रिवायत में है कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़े आ'ज़म رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स से पूछा : तुम्हारा नाम क्या है ? उस ने बताया : "**जम्रह** (या'नी दहक्ता हुवा अंगारा)।" बाप का नाम पूछा तो बोला : **शिहाब** (या'नी सुलग्ती आग का शो'ला)। क़बीले का नाम दरयाफ़्त करने पर उस ने बताया : **हु-रक़ह** (आग में जल कर सियाह हो जाने वाली शै)। वत़न का नाम पूछा तो उस ने जवाब दिया : **ह़र्रतुन्नार** (आग की तपश)। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने पूछा कि येह कहां वाक़ेअ़ है ? अ़र्ज़ की, कि येह **ज़ातु लज़ा** (आग की लपट जिस में धुवां न हो) में है। उस शख़्स का येह तअ़ारुफ़ सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़रमाया : अपने अहलो अ़याल की जल्द ख़बर लो कहीं वोह जल कर ख़ाक न हो गए हों। वोह शख़्स अपने घर गया तो वाक़ेई उस के घर को आग लग चुकी थी और सब के सब जल मरे थे।

(المؤطا، كتاب الاستئذان، باب مايكره من الاسماء، الحديث: ١٨٧١، ج٢، ص٤٥٤)

अहम नोट : बच्चों के नाम कैसे रखे जाएं इस के मु-तअ़ल्लिक़ मज़ीद शर-ई रहनुमाई ह़ासिल करने के लिये दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 312 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, "**बहारे शरीअ़त**" ह़िस्सा सोलह्वां का मुत़ा-लआ़ कीजिये।

ह़क़ीक़ी तिजारत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ एक काम्याब ताजिर थे और येह कैसे हो सकता है कि एक काम्याब ताजिर घाटे का सौदा कर ले ? चुनान्चे, इस्लाम क़बूल करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने जो तिजारत की वोह बड़ी ही नफ़्अ़ मन्द साबित हुई इस त़रह़ कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपना तन मन धन सब कुछ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ और उस के मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम पर क़ुरबान कर दिया और **अल्लाह** व रसूल عَزَّوَجَلَّ وصَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने भी इसे क़बूल फ़रमा लिया। चुनान्चे,

ऐसे ही लोगों के मु-तअ़ल्लिक़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इर्शाद फ़रमाया :

وَمِنَ النَّاسِ مَنْ يَّشْرِیْ نَفْسَهُ ابْتِغَآءَ مَرْضَاتِ اللّٰهِ ؕ وَاللّٰهُ رَءُوْفٌۢ بِالْعِبَادِ ﴿۲۰۷﴾ (پ۲، البقرۃ: ۲۰۷)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : और कोई आदमी अपनी जान बेचता है **अल्लाह** की मरज़ी चाहने में और **अल्लाह** बन्दों पर मेहरबान है।

येही वजह है कि इस्लाम क़बूल करने के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हर लम्ह़ा हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के शाना ब शाना खड़े रहे। ज़ुल्मो सितम की आंधियां चलीं तो घबराए न पछताए बल्कि अपने मह़बूबे करीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की नसीह़त के मुत़ाबिक़ कभी सब्र का दामन

हाथ से न जाने दिया और जब इस्लामी फ़ुतूह़ात के नतीजे में **तअ़य्युश** व फ़रावानी का दौर आया तो मालो दौलत की चमक दमक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ पर असर अन्दाज़ न हो सकी । चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की ज़ौजा, ह़ज़रते सुअ़्दा बिन्ते औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि एक दिन ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तशरीफ़ लाए तो मैं ने उन्हें रन्जीदा ख़ात़िर देख कर सबब पूछा और अ़र्ज़ की : "क्या मुझ से कोई ख़त़ा हो गई है ?" फ़रमाने लगे : "नहीं ! परेशान तो हूं मगर इस का सबब आप नहीं, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا तो एक मर्दे मुस्लिम की नेक बीवी हैं, बल्कि मेरी परेशानी का सबब येह है कि मेरे पास काफ़ी मिक़्दार में माल जम्अ़ हो गया है और समझ में नहीं आ रहा कि इस का क्या करूं ?" फ़रमाती हैं, मैं ने अ़र्ज़ की : "येह भी कोई परेशानी वाली बात है, आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ इसे (राहे ख़ुदा में) तक़्सीम फ़रमा दें ।" पस ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सारा माल लोगों में तक़्सीम फ़रमा दिया यहां तक कि एक दिरहम भी न छोड़ा । ह़ज़रते सुअ़्दा बिन्ते औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہَا फ़रमाती हैं कि मैं ने जब ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के ख़ज़ान्ची से माल की मिक़्दार मा'लूम की तो उस ने 4 लाख दिरहम बताई ।

(الطبقات الكبرىٰ لابن سعد، الرقم ٤٧ طلحة بن عبيد اللّٰه، ج٣، ص١٦٥، المعجم الكبير، الرقم ٤٧ طلحة بن عبيد اللّٰه، ج٣، ص١٦٥، المعجم الكبير، الحديث: ١٩٥، ج١، ص ١١٢)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ से तिजारत का नफ़्अ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रह़ जो भी राहे ख़ुदा में माल ख़र्च करता है **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ उसे अपनी ब-र-कतों से कभी भी ख़ाली और मह़रूम नहीं रहने देता। चुनान्चे,

फ़रमाने बारी तआ़ला है :

مَنْ ذَا الَّذِیْ یُقْرِضُ اللّٰهَ قَرْضًا حَسَنًا فَیُضٰعِفَهٗ لَهٗۤ اَضْعَافًا كَثِیْرَةً ؕ وَ اللّٰهُ یَقْبِضُ وَ یَبْصُۜطُ ۪ (پ۲، البقرة:۲۴۵)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : है कोई जो **अल्लाह** को क़र्ज़े ह़सन दे तो **अल्लाह** उस के लिये बहुत गुना बढ़ा दे और **अल्लाह** तंगी और कशाइश करता है।

सदरुल अफ़ाज़िल ह़ज़रते अ़ल्लामा मौलाना मुह़म्मद नई़मुद्दीन मुरादआबादी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْھَادِی **''ख़ज़ाइनुल इरफ़ान''** में इस आयते मुबा-रका के तह़्त फ़रमाते हैं : राहे ख़ुदा में ख़र्च करने को क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाया येह कमाल लुत़्फ़ो करम है बन्दा उस का बनाया हुवा और बन्दे का माल उस का अ़त़ा फ़रमाया हुवा ह़क़ीक़ी मालिक वोह और बन्दा उस की अ़त़ा से मजाज़ी मिल्क रखता है मगर क़र्ज़ से ता'बीर फ़रमाने में येह दिल नशीन करना मन्ज़ूर है कि जिस त़रह़ क़र्ज़ देने वाला इत़्मीनान रखता है कि उस का माल ज़ाएअ़ नहीं हुवा वोह उस की वापसी का मुस्तह़िक़ है ऐसा ही राहे ख़ुदा में ख़र्च करने वाले को इत़्मीनान रखना चाहिये कि वोह इस इन्फ़ाक़ की जज़ा बिल यक़ीन पाएगा और बहुत

ज़ियादा पाएगा। (خزائن العرفان، پ٢، البقرة، تحت الاية:٢٤٥)

सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का यौमिय्या नफ़्अ़

प्यारे इस्लामी भाइयो ! राहे ख़ुदा में दी जाने वाली चीज़ हरगिज़ ज़ाएअ़ नहीं होती आख़िरत में अज्रो सवाब की ह़क़दारी तो है ही, बा'ज़ अवक़ात दुन्या में भी इज़ाफ़े के साथ हाथों हाथ इस का ने'मल बदल अ़त़ा किया जाता है और येह यक़ीनी बात है कि राहे ख़ुदा में देने से माल बढ़ता है घटता नहीं जैसा कि ह़ज़रते सय्यिदुना अबू हुरैरा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं : ''दो आ़लम के मालिको मुख़्तार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''स-दक़ा माल में कमी नहीं करता।'' (صحیح مسلم، کتاب البر والصلة، باب استجباب العفو و التواضع، الحدیث٢٥٨٨، ص ١٣٩٧)

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपने परवर्द गार عَزَّوَجَلَّ से जो तिजारत की थी उस का ह़क़ीक़ी नफ़्अ़ तो यक़ीनन उन्हें आख़िरत में मिलेगा मगर दुन्या में भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ इस की ब-र-कतों से महरूम न रहे। चुनान्चे,

मरवी है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की यौमिय्या आमदनी एक हज़ार दिरहम से ज़ाइद थी।

(المعجم الکبیر، الحدیث:١٩٦، ج١، ص١١٢)

दुन्या की बे वुक़्अ़ती

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जो लोग ह़बीबे ख़ुदा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के जल्वों में गुम होते हैं उन की नज़रों में दुन्या व मा फ़ीहा की कोई वुक़्अ़त नहीं होती, येह दुन्या से दूर भागते हैं और हर वक़्त सफ़रे आख़िरत के लिये ज़ादे राह तय्यार करने में मश्ग़ूल रहते हैं। येही वजह है कि जब हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से सब से बेहतर इन्सान के बारे में पूछा गया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''साफ़ दिल और सच्ची ज़बान वाला इन्सान सब से बेहतर है।'' अ़र्ज़ की गई : ''साफ़ दिल वाले कौन हैं ?'' फ़रमाया : ''वोह मुत्तक़ी व परहेज़ गार मुसल्मान जिन के दिल में (ज़र्रा बराबर) ना फ़रमानी और बुग़्ज़ व ह़सद न हो।'' अ़र्ज़ की गई : ''इस के बा'द ?'' फ़रमाया : ''जो दुन्या से नफ़रत करें और आख़िरत से मह़ब्बत।''

(شعب الایمان للبیهقی، باب حفظ اللسان، ج٤، ص٢٠٥)

मह़ब्बत की कुन्जी :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की मह़ब्बत पाने के लिये लाज़िम है कि बन्दा दुन्या से बे रग़बत हो जाए। जैसा कि हुज़ूर नबिय्ये रह़मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का फ़रमाने आ़लीशान है : ''जब तुम **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का मह़बूब बनना चाहो तो दुन्या से बे रग़बत हो जाओ।''

(قوت القلوب، الفصل التاسع والعشرون، ج١، ص١٩٥)

सख़ावत, ज़ोह्द की कुन्जी है :

शैख़ अबू त़ालिब मक्की عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی फ़रमाते हैं कि दुन्या से बे रग़बत होने के लिये सब से पहले सख़ावत को अपनाना पड़ता है क्यूं कि जो सख़ी न हो वोह दुन्या से बे रग़बत नहीं हो सकता और जो दुन्या से मुंह न मोड़े **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का महबूब भी नहीं हो सकता।

(قوت القلوب، الفصل التاسع والعشرون، ج۱، ص۱۹۵)

सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सख़ावत

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना **त़ल्ह़ा** बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार भी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के ऐसे बन्दों में होता है जिन्हों ने अपनी ज़िन्दगी में हमेशा दुन्या को अपने जूते की नोक पर रखा और कभी भी इस से दिल न लगाया और जो कमाया उसे जम्अ़ न किया बल्कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की रिज़ा ह़ासिल करने के लिये राहे ख़ुदा में ख़र्च कर दिया। चुनान्चे,

एक बार आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक ज़मीन सात लाख दिरहम में फ़रोख़्त की और येह माल बा'ज़ वुजूहात की वजह से एक रात आप के पास रह गया तो सारी रात आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ परेशान रहे यहां तक कि सुब्ह़ होते ही आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने वोह सारा माल तक़्सीम फ़रमा दिया। (الزھد للامام احمد بن حنبل، اخبار طلحة بن عبیداللّٰہ، الحدیث:۷۸۳، ص۱۶۸)

इसी त़रह़ इमाम शम्सुद्दीन मुह़म्मद बिन अह़मद ज़-हबी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 748 हि.) **सियरु आ'लामुन्नु-बलाअ** में फ़रमाते हैं कि एक बार ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को रात के वक़्त **ह़ज़्र मूत** से सात लाख दिरहम मौसूल हुए तो परेशान और बेचैन हो गए । ज़ौजए मोह़तरमा ने अ़र्ज़ की : "आज आप को क्या हुवा है ?" फ़रमाया कि मुझे येह फ़िक्र दामन गीर है कि जिस बन्दे की रातें **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में इ़बादत करते हुए गुज़रती हों, घर में इस क़दर माल की मौजू-दगी में आज उस की बारगाह में कैसे ह़ाज़िर होगा ? तो म-दनी सोच की मालिक आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा ने बड़े अदब से अ़र्ज़ की : इस में परेशानी की क्या बात है ? आप अपने नादार दोस्तों को क्यूं भूल रहे हैं ? सुब्ह़ होते ही उन्हें बुला कर येह सारा माल उन में तक़्सीम करने की निय्यत फ़रमा लीजिये और इस वक़्त बड़े इत़्मीनान के साथ रब عَزَّوَجَلَّ की बारगाह में ह़ाज़िर हो जाइये । नेक बख़्त ज़ौजा की येह बात सुन कर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का दिल ख़ुशी से सरशार हो गया और आप ने फ़रमाया : आप वाक़ेई़ नेक बाप की नेक बेटी हैं ।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! जान लीजिये कि येह नेक बाप की नेक बेटी कोई और नहीं बल्कि अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की आंखों की ठन्डक या'नी ह़ज़रते सय्यि-दतुना उम्मे कुल्सूम رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا थीं । चुनान्चे,

सुब्ह होते ही ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने मुहाजिरीन व अन्सार में सारा माल तक़्सीम करना शुरूअ़ कर दिया और उस में से कुछ ह़िस्सा अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा کَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم की ख़िदमत में भी भेजा। अचानक आप की ज़ौजए मोह़तरमा ह़ाज़िर हुईं और अ़र्ज़ की : "ऐ अबू मुह़म्मद ! क्या इस माल में घर वालों का भी कुछ ह़िस्सा है ?" तो इर्शाद फ़रमाया : "आप कहां रह गई थीं, चलें जो बाक़ी बच गया है वोह सब आप ले लें।" फ़रमाती हैं कि जब बक़िय्या माल का ह़िसाब किया तो वोह सिर्फ़ एक हज़ार दिरहम ही रह गया था।

(سیر اعلام النبلاء، الرقم ٧ طلحه بن عبید اللّٰه، ج٣، ص١٩. مفهوماً)

बिन मांगे देते :

ह़ज़रते सय्यिदुना क़बीसा बिन जाबिर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि मैं ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की सोह़बत में रहा तो मैं ने उन से बढ़ कर किसी को नहीं देखा जो बिन मांगे लोगों में कसीर माल बांटता हो। (المعجم الکبیر، الحدیث:١٩٤، ج١، ص١١١)

सय्यिदुना त़ल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तवक्कुल

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ज़ौजा, ह़ज़रते सुअ़्दा बिन्ते औ़फ़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا बयान करती हैं कि "ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक दिन एक लाख दिरहम

राहे ख़ुदा में स-दक़ा किये और उस दिन आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ नमाज़ के लिये मस्जिद न जा सके क्यूं कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का लिबास ऐसा न था जिसे पहन कर मस्जिद में चले जाते।''

(موسوعة لابن الدنيا، كتاب إصلاح المال، باب فضل المال، الحديث:٩٧، ج٧، ص٤٢٤)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! देखा आप ने ! ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अपनी ज़रूरत के लिये भी कुछ बचा कर न रखा बल्कि सब कुछ दूसरे ह़ाजत मन्दों को अ़त़ा कर दिया। चुनान्चे,

भूका शेर

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 1548 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**फ़ैज़ाने सुन्नत**'' सफ़ह़ा 806 ता 808 पर शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه ने ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हज्वेरी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ के ह़वाले से अपनी ज़ात पर दूसरों को तरजीह़ देने के मु-तअ़ल्लिक़ एक बड़ी ही ख़ूब सूरत ह़िकायत नक़्ल फ़रमाई है। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना दाता गंज बख़्श अ़ली हज्वेरी رَحْمَةُاللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ फ़रमाते हैं : ''मैं ने शैख़ अह़मद ह़म्मादी सरख़सी عَلَیْہِ رَحْمَةُ اللّٰہِ الْقَوِی से उन की तौबा का सबब पूछा, तो कहने लगे : ''एक बार मैं अपने ऊंटों को ले कर ''सरख़स'' से रवाना हुवा। दौराने सफ़र जंगल में एक भूके

शेर ने मेरा एक ऊंट ज़ख़्मी कर के गिरा दिया और फिर बुलन्द टीले पर चढ़ कर डकारने लगा, उस की आवाज़ सुनते ही बहुत सारे दरिन्दे इकठ्ठे हो गए। शेर नीचे उतरा और उस ने उसी ज़ख़्मी ऊंट को चीरा फाड़ा मगर खुद कुछ न खाया बल्कि दोबारा टीले पर जा बैठा, जम्अ़ शुदा दरिन्दे ऊंट पर टूट पड़े और खा कर चलते बने, बाक़ी मांदा गोश्त खाने के लिये शेर क़रीब आया कि एक लंगड़ी लूमड़ी दूर से आती दिखाई दी, शेर वापस अपनी जगह चला गया। लूमड़ी ह़स्बे ज़रूरत खा कर जब जा चुकी तब शेर ने उस गोश्त में से थोड़ा सा खाया। मैं दूर से येह सब देख रहा था, अचानक शेर ने मेरा रुख़ किया और ब ज़बाने फ़सीह़ बोला : "अह़मद ! एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है मर्दाने राहे ह़क़ तो अपनी जान भी क़ुरबान कर दिया करते हैं।" मैं ने इस अनोखे वाक़िए़ से मु-तअस्सिर हो कर अपने तमाम गुनाहों से तौबा की और दुन्या से किनारा कश हो कर अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ से लौ लगा ली।"

(कश्फ़ुल मह़जूब मुतर्जम, स. 383)

मुर्ग़ी का तवक्कुल

इस ह़िकायत के नक़्ल करने के बा'द शैख़े त़रीक़त, अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَكَاتُهُمُ الْعَالِيَه फ़रमाते हैं :

''**मीठे मीठे इस्लामी भाइयो !** देखा आप ने ! भूके शेर ने अपना शिकार दूसरे जानवरों पर ईसार कर के भूक बरदाश्त करने की बेहतरीन मिसाल क़ाइम की और फिर **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की अ़ता से उस ने कितनी ज़बर दस्त नसीह़त की, कि ''एक लुक़्मे का ईसार तो कुत्तों का काम है मर्द को चाहिये कि अपनी जान क़ुरबान कर दे।'' मगर आह ! आज के हम जैसे बे अ़मल मुसल्मान एक लुक़्मे का ईसार तो क्या करेंगे जिन से बन पड़ता है वोह दूसरों के मुंह से भी लुक़्मा छीन लेते हैं बल्कि एक लुक़्मे की ख़ातिर बा'ज़ अवक़ात क़त्लो ग़ारत गरी तक से नहीं चूकते। ढेरों ढेर ग़िज़ाएं मौजूद होने के बा वुजूद एक एक ''टुकड़े'' की ख़ातिर फ़साद बरपा करते फिरते हैं। कहा जाता है : ''सिर्फ़ तीन ज़ी रूह़ ऐसे हैं जो ग़िज़ाओं का ज़ख़ीरा करते हैं : (1) (हम जैसे गुनहगार) इन्सान (2) चूहा और (3) च्यूंटी।'' इन के इ़लावा कोई भी ह़ैवान दूसरे वक़्त के लिये बचा कर नहीं रखता, आप ने मुर्ग़ी का तवक्कुल देखा होगा, उस को पानी का पियाला पेश किया जाता है तो पी चुकने के बा'द पियाले के कनारे पर पाउं रख कर उस को उलट देती है, उसे अपने **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ पर कामिल भरोसा होता है कि अभी पिलाया है तो प्यास लगने पर दोबारा भी पिलाएगा। और लुत़्फ़ की बात येह है कि उस को पिलाने की ख़िदमत भी इन्सान से ली जाती है। हां **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के नेक बन्दों का तवक्कुल बे मिसाल होता है। तवक्कुल की एक ता'रीफ़ येह भी है कि ''सिर्फ़ **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ की इ़नायत पर भरोसा करे और जो कुछ लोगों के पास है

उस से मायूस हो जाए।" (ملخص از رسالۃالقُشَیرِیّہ، باب التوکُّل، ص ۱۶۹)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! अमीरे अहले सुन्नत, बानिये दा'वते इस्लामी ह़ज़रत अ़ल्लामा मौलाना अबू बिलाल मुह़म्मद इल्यास अ़त्तार क़ादिरी دَامَتْ بَرَکَاتُہُمُ الْعَالِیَہ की नक़्ल कर्दा इस ह़िकायत और इस के तह़्त बयान किये गए दर्स से मा'लूम होता है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ तवक्कुल के आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे, येही वजह है कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ने सब कुछ दूसरों को दे दिया और अपनी ज़ात के लिये कुछ भी बचा कर न रखा।

सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ के अल्क़ाब

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ की इन्ही सिफ़ात की वजह से सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ज़बाने ह़क़ से आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ को **अल फ़य्याज़, अलजूद** और **अलख़ैर** के लक़ब अ़त़ा हुए। चुनान्चे,

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُ ख़ुद बयान करते हैं कि ग़ज़्वए उहुद के दिन मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیۡہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे **त़ल्ह़तुल ख़ैर**, ग़ज़्वए अ़शीरह में **त़ल्ह़तुल फ़य्याज़** और ग़ज़्वए हुनैन में **त़ल्ह़तुल जूद** के अल्क़ाबात से

याद फ़रमाया। (المعجم الكبير، الحديث:١٩٧، ج١، ص١١٢)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना इमाम **अ़ब्दुर्रऊफ़** मुनावी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللّٰهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 1031 हि.) **''फ़ैज़ुल क़दीर शर्हु जामिइ़स्सग़ीर''** में फ़रमाते हैं कि महबूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े महशर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم के आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ को इन अल्क़ाबात से नवाज़ने की वजह आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का कसरत से सख़ावत करना है। म-सलन

❁..... एक बार आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने सात लाख की ज़मीन बेची और सारी रक़म फ़ु-क़रा में तक़्सीम फ़रमा दी।

❁..... एक बार आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ से किसी रिश्तेदार ने सुवाल किया तो फ़ौरन (पास मौजूद) तीन सो दिरहम या दीनार अ़ता फ़रमा दिये।

❁..... आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ हर साल उम्मुल मुअमिनीन सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا की ख़िदमत में दस हज़ार दिरहम भेजा करते।

❁..... एक दिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने एक लाख दिरहम तक़्सीम फ़रमाए और ह़ालत येह थी कि उस दिन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास मुनासिब लिबास न था जिसे पहन कर नमाज़ के लिये तशरीफ़ ले जाते।

(فيض القدير، حرف الطاء، تحت الحديث:٥٢٧٤، ج٤، ص٣٥٧)

सय्यिदुना तल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के फ़ज़ाइल

"तारीख़े मदीना दिमश्क़" में ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का तआ़रुफ़ कुछ यूं बयान किया गया है :

❁..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार उन दस[10] अकाबिर सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन को दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह़रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दुन्या ही में जन्नती होने की ख़ुश ख़बरी दे दी थी।

❁..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन आठ[8] अफ़्राद में से एक हैं जिन्हों ने सब से पहले इस्लाम क़बूल किया।

❁..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार उन पांच[5] सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जो अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ के हाथों मुसल्मान हुए।

❁..... आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ उन छ बुज़ुर्ग तरीन हस्तियों में से एक हैं जो ख़िलाफ़त के बारे में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की बनाई गई मजलिसे शूरा के अरकान थे।

❁..... आप उन ख़ुश नसीब सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में से एक हैं जिन से मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم आख़िरी वक़्त तक राज़ी थे। (تاریخ مدینة دمشق، الرقم ٢٩٨٣ طلحة بن عبید اللّٰه، ج٢٥، ص٥٤)

सय्यिदुना जिब्राईल عَلَيْهِ السَّلَام का सलाम :

इमाम अबू जा'फ़र मुहिब त़-बरी عَلَيْهِ رَحْمَةُ اللهِ الْقَوِى (मु-तवफ़्फ़ा 310 हि.) अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़मर फ़ारूक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से रिवायत करते हैं कि एक रात रसूले अकरम, शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ऊंट का कजावा गिर गया तो मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना : "जो मेरा कजावा दुरुस्त करेगा, उस के लिये जन्नत की बिशारत है।" तो ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने फ़ौरन आगे बढ़ कर येह सआ़दत अपने नाम कर ली। जब सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सुवार हुए तो इर्शाद फ़रमाया : "ऐ त़ल्हा ! येह जिब्राईल तुम्हें सलाम कह रहे हैं और कहते हैं कि मैं क़ियामत की होल नाकियों में आप के साथ होउंगा और आप को उन से बचाऊंगा।

(الریاض النضرة فی مناقب العشرة، الباب الخامس فی مناقب ابی محمد طلحة بن عبید اللّٰہ، الفصل السادس، ذکر اختصاص بالمبادرة الی تسویة رحل رسول اللّٰہ حین دعا لی ذلك، ج۲، الجزء الرابع، ص۲۵٤)

जन्नती पड़ोसी :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस से मा'लूम हुवा कि जिन दस[10] सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان को जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी गई थी ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार भी उन

अ़-श-रए मुबश्शरह में होता है मगर येह ख़ुश ख़बरी पाने के बा वुजूद जब भी आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को मज़ीद ब-र-कतें ह़ासिल करने का मौक़अ़ मिला आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कभी हाथ से जाने न दिया। और इस पर मज़ीद इन्आ़म येह मिला कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को जन्नत में शहन्शाहे अबरार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का पड़ोस मिल गया। चुनान्चे,

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰہُ تَعَالٰی وَجْہَہُ الْکَرِیْم फ़रमाते हैं कि मैं ने अपने कानों से **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि त़ल्ह़ा और ज़ुबैर (رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا) जन्नत में मेरे पड़ोसी होंगे।

(جامع الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب طلحة بن عبید اللّٰہ، الحدیث:۳۷۶۲، ج۵، ص۴۱۳)

जन्नत वाजिब हो गई :

ग़ज़वए उहुद के दिन दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दौहरी ज़िरह पहन रखी थी। जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने एक चट्टान पर चढ़ने का इरादा फ़रमाया तो (ज़िरह की वजह से) ऊपर चढ़ने में मशक़्क़त हुई चुनान्चे, आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को नीचे बिठा कर ऊपर चट्टान पर तशरीफ़ फ़रमा हो

गए। रावी फ़रमाते हैं कि उस वक़्त मैं ने आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह इर्शाद फ़रमाते सुना कि त़ल्ह़ा के लिये (जन्नत) वाजिब हो गई।

(جامع الترمذی، کتاب المناقب، باب مناقب طلحة بن عبید اللّٰه، الحدیث:۳۷۵۹، ج۵، ص۴۱۲)

शहादत की ख़ुश ख़बरी :

ह़ज़रते जाबिर बिन अ़ब्दुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا रिवायत करते हैं कि मैं ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते सुना कि जो ज़मीन पर चलते फिरते किसी शहीद को देख कर ख़ुश होना चाहता हो वोह त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह को देख ले।"

(المرجع السابق، الحدیث: ۳۷۶۰)

ख़ानदाने मुस्त़फ़ा से तअ़ल्लुक़ :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इमाम अबू जा'फ़र मुह़िब त़-बरी (मु-तवफ़्फ़ा 310 हि.) عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی ने ज़िक्र किया है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ख़ानदान से एक ख़ास तअ़ल्लुक़ था और वोह येह कि आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ज़ैनब बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا की बहन ह़ज़रते सय्यि-दतुना ह़म्ना बिन्ते जह़्श رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا से शादी की थी और येह दोनों **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की फूफी सय्यिदह उमैमा बिन्ते अ़ब्दुल मुत्त़लिब की

साहि़ब ज़ादियां थीं ।

(الریاض النضرۃ فی مناقب العشرۃ، الباب الخامس فی مناقب ابی محمد طلحۃ بن عبید اللّٰہ، الفصل السادس، ذکر انہ سلف النبی فی الدنیا و الآخرۃ، ج ۲، الجزء الرابع، ص ۲۵۹)

हिजरत

सय्यिदुल मुबल्लिग़ीन, रह़्मतुल्लिल आ़-लमीन صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को जब हिजरत का हुक्म हुवा और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मक्का शरीफ़ زَادَھَا اللّٰہُ شَرَفًاوَّتَعْظِیْمًا से मदीनए मुनव्वरह की जानिब रख़्ते सफ़र बांधा । उस वक़्त ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम गए हुए थे । चुनान्चे, जब आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم मक़ामे **ख़र्रार** से मदीना शरीफ़ रवाना हुए तो रास्ते में ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ भी मिल गए । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ चूंकि कपड़े के ताजिर थे लिहाज़ा आप ने रह़मते आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم और अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की ख़िदमत में शामी लिबास पेश किया और अ़र्ज़ की : "अहले मदीना आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की आमद के इन्तिज़ार में आंखें बिछाए बैठे हैं ।" तो सरकारे नामदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने अहले मदीना को इन्तिज़ार की तक्लीफ़ से बचाने के लिये अपना सफ़र तेज़ कर दिया और ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ मक्का की जानिब चल पड़े ।

मक्कए मुकर्रमा زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पहुंच कर आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ ने ज़रूरी कामों से फ़राग़त ह़ासिल की और फिर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की ज़ुल्फ़ों के उस असीर ने अमीरुल मुअमिनीन सय्यिदुना सिद्दीक़े अक्बर رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ के अहले ख़ाना को साथ लिया और मदीनए मुनव्वरह زَادَهَا اللّٰهُ شَرَفًاوَّتَعْظِيْمًا पैकरे हुस्नो जमाल صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم की बारगाहे बेकस पनाह में जा पहुंचे।

(تاريخ مدينة دمشق، الرقم ٢٩٨٣ طلحة بن عبيد اللّٰه، ج٢٥، ص٦٦)

अख़ुव्वत व भाईचारा

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना ज़ुबैर बिन अल अ़व्वाम رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا ने जब इस्लाम क़बूल किया और अपने भी बेगाने हो गए तो हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने हिजरत से क़ब्ल मक्कए मुकर्रमा में इन दोनों को भाई भाई बना दिया जिसे मुवाख़ात के नाम से जाना जाता है और हिजरत के बा'द मदीनए मुनव्वरह में सरवरे दो आ़लम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना अबू अय्यूब अन्सारी رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُمَا के दरमियान मुवाख़ात क़ाइम फ़रमाई।

(اسد الغابة، باب الطاء طلحة بن عبيد اللّٰه القرشي، ج٣، ص٨٤)

जा निसारी व वफ़ा शिआ़री

मदीना शरीफ़ की ज़िन्दगी मक्कए मुकर्रमा से काफ़ी मुख़्तलिफ़ थी। मदीना शरीफ़ के बर अ़क्स मक्कए मुकर्रमा में इस्लामी ता'लीमात पर अ़मल करना जान जोखों में डालने के मु-तरादिफ़ था। लिहाज़ा मदीना शरीफ़ पहुंच कर मुसल्मानों ने सुख का सांस लिया ही था कि कुफ़्फ़ारे मक्का को येह भी न भाया और वोह अम्नो आश्ती का दर्स देने वालों को ख़ाक व ख़ून में नहलाने के दर पै हो गए। सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم ने मक्कए मुकर्रमा में जो सब्र का दामन थामे रहने का हुक्म दिया था अब मदीनए मुनव्वरह में कुफ़्फ़ारे बद अत्वार की शर अंगेज़ियों का डट कर मुक़ाबला करने का हुक्म दिया गया।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मक्कए मुकर्रमा की सुऊ़बतों और मुश्किल घड़ियों में सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان ने सब्र का दामन थामे रखा और कभी उन के पायए इस्तिक़्लाल में फ़र्क़ न आया बल्कि येह सख़ियां तो मज़ीद उन के ईमान की पुख़्तागी का बाइ़स बनतीं। जैसा कि किसी शाइ़र ने सह़ाबए किराम के इस फ़े'ल को अपनाने की तरग़ीब दिलाते हुए क्या ख़ूब कहा है :

तुन्दिये बादे मुख़ालिफ़ से न घबरा ऐ उ़क़ाब
येह तो चलती है तुझे ऊंचा उड़ाने के लिये

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार उन जा निसार सह़ाबए किराम عَلَيْهِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने अपना तन मन धन सब कुछ राहे ख़ुदा में क़ुरबान करने का अ़ह्द कर रखा था। येह

लोग हर लम्हा इस बात के मुन्तज़िर रहते कि कब कोई नया हुक्म आए और उस पर अ़मल पैरा होने में सब्क़त ले जाएं। येही वजह है कि ह़क़्क़ो बात़िल के दरमियान होने वाले पहले मा'रिके या'नी ग़ज़वए बद्र में ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ शरीक न हो सके क्यूं कि आप मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم का हुक्म बजा लाने में मसरूफ़ थे। पस येही वजह है कि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने ग़ज़वह के ख़त्म होने के बा'द न सिर्फ़ आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को माले ग़नीमत में ह़िस्सा अ़त़ा फ़रमाया बल्कि अज्रो सवाब की नवीद भी दी। चुनान्चे,

माले दुन्या के साथ अज्रे आख़िरत भी :

अत्त-बक़ातुल कुब्रा में है कि सरकारे मक्कए मुकर्रमा, सरदारे मदीनए मुनव्वरह صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह बात मा'लूम थी कि अहले मक्का का एक क़ाफ़िला तिजारत की ग़रज़ से मुल्के शाम गया हुवा है और जब उस की वापसी का वक़्त क़रीब आया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने दस दिन क़ब्ल ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा और ह़ज़रते सय्यिदुना सईद बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को जासूसी के लिये रवाना फ़रमाया येह दोनों ह़ज़रात मक़ामे ह़ूरा पर उस क़ाफ़िले के इन्तिज़ार में जा ठहरे, जब क़ाफ़िला उन के पास से गुज़रा तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को आगाह करने के लिये चल पड़े मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को येह मा'लूम हो चुका था लिहाज़ा आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم उन के पहुंचने से पहले ही सह़ाबए किराम को ले

कर रवाना हो गए। उधर क़ाफ़िले वालों को मुसल्मानों के ह़म्ले के मु-तअ़ल्लिक़ मा'लूम हुवा तो उन्हों ने अहले मक्का को मदद के लिये पुकारा और साह़िली रास्ता इख़्तियार कर के बड़ी तेज़ी से रात दिन सफ़र करते हुए मक्का जा पहुंचे। ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह और ह़ज़रते सय्यिदुना सई़द बिन ज़ैद رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की रवा-नगी का इ़ल्म न था। जब उन्हें मदीनए मुनव्वरह पहुंच कर मा'लूम हुवा तो फ़ौरन आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ रवाना हुए और जब **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के प्यारे ह़बीब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की बारगाह में पहुंचे तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ग़ज़वए बद्र के ख़ातिमे के बा'द वापस तशरीफ़ ला रहे थे। (الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم٤٧ طلحة بن عبیداللّٰه، ج٣، ص١٦٢)

अ़ल्लामा इब्ने अ़ब्दुल बिर क़ुरतुबी رَحْمَۃُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہ (मु-तवफ़्फ़ा 463 हि.) ने "**अल इस्तीआ़ब फ़ी मा'रि-फ़तिल अस्ह़ाब**" में एक रिवायत ज़िक्र की है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने बारगाहे नुबुव्वत में ह़ाज़िर हो कर अ़र्ज़ की : "क्या उन्हें ग़ज़वए बद्र में ह़ासिल होने वाले माले ग़नीमत से ह़िस्सा मिलेगा ?" तो सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कमाले शफ़्क़त फ़रमाते हुए इर्शाद फ़रमाया : "हां ! तुम्हें ज़रूर ह़िस्सा मिलेगा।" और जब आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अस्ह़ाबे बद्र को मिलने वाले अज्रो सवाब के बारे में अ़र्ज़ की, कि मेरे अज्र का क्या होगा ? तो आप

صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने फ़रमाया : ''तुम्हें अज्र भी मिलेगा।''

(الاستیعاب، الرقم ١٢٨٩ طلحة بن عبید اللّٰه التیمی، ج٢، ص٣١٧. متلقطاً)

शुजाअ़त व बहादुरी

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ग़ज़वए बद्र में चूंकि बहादुरी के जौहर न दिखा सके थे लिहाज़ा जब ग़ज़वए उहुद के लिये मैदान सजा तो आप उस में ऐसे शह सुवार बन कर कूदे कि सब देखते ही रह गए। चुनान्चे,

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा फ़रमाती हैं कि जब अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ को ग़ज़वए उहुद की याद सताती तो आप रोने लगते और फ़रमाते कि येह दिन तो था ही ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का। फ़रमाते हैं कि जब मैं (अफ़्रा तफ़्री के आ़लम में) सब से पहले हुज़ूर नबिय्ये पाक, साह़िबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुवा तो मैं ने देखा कि एक शख़्स बड़ी बहादुरी व जवां मर्दी से आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त कर रहा है, मेरे दिल में आया कि ख़ुदा करे येह ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ हों और वोह वाक़ेई सय्यिदुना त़ल्हा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ही थे। और मुझे उस वक़्त सब से बढ़ कर येही शै मह़बूब थी कि सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार, मक्की म-दनी सरकार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ह़िफ़ाज़त पर इस जवां मर्दी से जान निछावर करने वाला मेरी क़ौम का फ़र्द हो।

(تاریخ اسلام للامام الذهبی، ج٢، ص١٩٠)

फ़िरिश्ते परों पर उठा लेते :

ग़ज़वए उहुद के मौक़अ़ पर जब मुसल्मानों पर हुस्ने अख़्लाक़ के पैकर, मह़बूबे रब्बे अक्बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की शहादत की अफ़्वाह बिजली बन कर गिरी तो सब शिकस्ता दिल हो गए । एक रिवायत में है कि इस आ़लम में बारह ऐसे जा निसार भी थे जो **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के गिर्द सीसा पिलाई हुई दीवार की त़रह़ खड़े थे और आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को दुश्मनाने इस्लाम की शर अंगेज़ी से मह़फ़ूज़ रखने के लिये जानों का नज़राना पेश कर रहे थे, उन बारह जा निसारों में ग्यारह अन्सारी और एक मुहाजिर थे। और येह मुहाजिर ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ थे ।

दो जहां के ताजवर, सुल्त़ाने बह्रो बर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम के हमराह पहाड़ की चोटी पर चढ़ने की कोशिश फ़रमा रहे थे, जब मुश्रिकीन को मा'लूम हुवा तो उन्हों ने फ़ौरन उस त़रफ़ ह़म्ला कर दिया । पस शहन्शाहे बनी आदम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया कि दुश्मनाने इस्लाम को कौन रोकेगा ? शहादत की तमन्ना से सरशार सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं इन्हें रोकता हूं ।" मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इजाज़त न दी और इर्शाद फ़रमाया कि अभी तुम्हारा वक़्त नहीं आया । चुनान्चे, एक अन्सारी ने आगे बढ़ कर

कुफ़्फ़ार की पेश क़दमी को रोकने की कोशिश की ताकि आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पहाड़ पर चढ़ कर मह़फ़ूज़ हो जाएं मगर वोह शहीद हो गए । इस त़रह़ एक एक कर के तमाम अन्सारी सह़ाबा عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان ने अपनी जानें आक़ा के नाम पर क़ुरबान कर दीं और सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के इ़लावा कोई बाक़ी न रहा । आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने कुफ़्फ़ार को मज़ीद आगे बढ़ते हुए देखा तो सरकारे वाला तबार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इजाज़त से कुफ़्फ़ार पर ऐसा ह़म्ला किया कि उन्हें छटी का दूध याद आ गया । और आख़िर कार कुफ़्फ़ारे बद अत़्वार को अपने मज़्मूम इरादे में काम्याबी की कोई राह नज़र न आई तो वोह भाग खड़े हुए ।

एक रिवायत में आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ख़ुद फ़रमाते हैं कि कुफ़्फ़ार के उस ह़म्ले में एक शख़्स ने ताजदारे रिसालत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم पर वार करना चाहा तो मैं ने अपना हाथ आगे कर दिया जिस की वजह से मेरा हाथ शल हो गया और तक्लीफ़ की शिद्दत से मुंह से आवाज़ निकल गई तो शहन्शाहे मदीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : ''ऐ काश ! तुम **बिस्मिल्लाह** कहते या **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ का ज़िक्र करते तो फ़िरिश्ते तुम्हें अपने परों पर उठा लेते और लोग तुम्हें अपनी आंखों से आस्मान में परवाज़ करता हुवा देख लेते ।''

(دلائل النبوۃ للبیہقی، باب تحریض النبی صلی اللّٰہ علیہ وسلم اصحابہ علی القتال یوم احد..... الخ، ج۳، ص۲۳۶)

शुजाअ़त के सत्तर से ज़ाइद तमग़े :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अबू बक्र सिद्दीक़ رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ फ़रमाते हैं कि ग़ज़वए उहुद में जब हम ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए तो हम ने देखा कि मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की हिफ़ाज़त करते हुए उन के जिस्मे अत़्हर पर सत्तर से ज़ाइद छोटे बड़े ज़ख़्म हैं और उन की उंग्लियां भी कट चुकी हैं।

(معرفة الصحابة لابی نعیم، معرفة طلحة بن عبید اللّٰہ، الحدیث:۳٦۹، ج۱، ص۱۱۲)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! मीठे मीठे आक़ा, मक्की म-दनी मुस्त़फ़ा صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नाम पर मर मिटने में जो मज़ा है वोह दुन्या की दूसरी किसी भी शै में नहीं, येही वजह है कि अन्सारी सह़ाबा परवानों की त़रह़ रिसालत की शम्अ़ पर अपनी जानें वार कर रहती दुन्या तक अपने नुक़ूश छोड़ गए।

जान दी, दी हुई उसी की थी

ह़क़ तो येह है कि ह़क़ अदा न हुवा

आ'ला ह़ज़रत, इमामे अहले सुन्नत, मुजद्दिदे दीनो मिल्लत, परवानए शम्ए़ रिसालत, मौलाना अश्शाह अह़मद रज़ा ख़ान عَلَیْہِ رَحْمَۃُ الرَّحْمٰن ने ह़दाइक़े बख़्शिश में अपने जज़्बाते इ़श्क़ का इज़्हार कुछ यूं फ़रमाया है :

करूं तेरे नाम पे जां फ़िदा, न बस एक जां दो जहां फ़िदा

दो जहां से भी नहीं जी भरा, करूं क्या करोड़ों जहां नहीं

नज़्र पूरी करने वाले :

प्यारे इस्लामी भाइयो ! वोह सह़ाबए किराम عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان जिन्हें किसी वजह से ग़ज़्वए बद्र में जिहाद का मौक़अ़ न मिल सका तो उन्हों ने येह अ़ह्द कर लिया कि अब अगर इन्हें सय्यिदे आ़लम, नूरे मुजस्सम صَلَّى اللهُ تَعَالٰى عَلَيۡهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم पर जान क़ुरबान करने की सआ़दत मिली तो वोह साबित क़दम रहेंगे और लड़ते रहेंगे यहां तक कि शहीद हो जाएं। इन अ़ह्द करने वालों में अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी, सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह, सईद बिन ज़ैद, सय्यिदुना अमीर ह़म्ज़ा और सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर عَلَيۡهِمُ الرِّضۡوَان वग़ैरा भी थे। चुनान्चे,

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ ने इन के इस अ़ह्द को इस त़रह़ बयान फ़रमाया है :

مِنَ الْمُؤْمِنِيْنَ رِجَالٌ صَدَقُوْا مَا عَاهَدُوا اللّٰهَ عَلَيْهِ ۚ فَمِنْهُمْ مَّنْ قَضٰى نَحْبَهٗ وَمِنْهُمْ مَّنْ يَّنْتَظِرُ ۖ وَمَا بَدَّلُوْا تَبْدِيْلًا ﴿۲۳﴾

(پ۲۱، الاحزاب:۲۳)

तर-ज-मए कन्ज़ुल ईमान : मुसल्मानों में कुछ वोह मर्द हैं जिन्हों ने सच्चा कर दिया जो अ़ह्द **अल्लाह** से किया था तो उन में कोई अपनी मन्नत पूरी कर चुका और कोई राह देख रहा है और वोह ज़रा न बदले।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! इस आयते मुबा-रका में जिन लोगों के बारे में येह आया है कि इन्हों ने अपना वा'दा सच्चा कर दिखाया तो इन से मुराद सय्यिदुश्शु-हदा ह़ज़रते सय्यिदुना अमीरे ह़म्ज़ा और ह़ज़रते सय्यिदुना मुस्अ़ब बिन उ़मैर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنۡہُمَا हैं या'नी येह मैदाने जिहाद में साबित क़दमी से लड़ते रहे और आख़िर कार शहीद हो गए और

शहादत का इन्तिज़ार करने वालों से मुराद अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना उ़स्माने ग़नी और ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا हैं।

(الکشاف، پ۲۱، الاحزاب، تحت الایۃ:۲۳، ج۳، ص۵۳۲)

उम्मुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यि-दतुना आ़इशा सिद्दीक़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہَا फ़रमाती हैं कि एक मरतबा मैं अपने घर में बैठी हुई थी और नूर के पैकर, तमाम नबियों के सरवर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के साथ सह़्न में तशरीफ़ फ़रमा थे, इसी दौरान ह़ज़रते त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ **अल्लाह** عَزَّ وَجَلَّ के मह़बूब, दानाए ग़ुयूब صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुए तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया : "जो किसी ऐसे ज़िन्दा शख़्स को देखना चाहता है जो अपनी मन्नतें पूरी कर चुका हो तो वोह त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को देख ले।"

(مسند ابی یعلی، مسند عائشۃ رضی اللہ تعالی عنہا، الحدیث:۴۸۷۷، ج۴، ص۲۷۲. المعجم الکبیر، الحدیث: ۱۹۵، ج۱، ص۱۱۲)

बा अदब बा नसीब :

तिरमिज़ी शरीफ़ में है कि सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن ने एक आ'राबी (देहाती) से कहा जो बारगाहे न-बवी के आदाब से कमा ह़क़्क़ुहू आगाह न था कि वोह ह़ुज़ूर नबिय्ये रह़मत, शफ़ीए़ उम्मत صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से उन सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के बारे में पूछे जिन के बारे में क़ुरआने करीम में आया है कि उन्हों ने अपनी नज़्र (मन्नत) पूरी कर दी।

(**प्यारे इस्लामी भाइयो !**) सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن हुज़ूर नबिय्ये करीम, रऊफ़ुर्रह़ीम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की इ़ज़्ज़त व अ़-ज़मत की वजह से उ़मूमन ख़ुद सुवाल करने से बचते और कोशिश करते कि कोई और सुवाल करे या कोई आ'राबी आया होता तो उस को सुवाल करने का कहते। चुनान्चे,

जब उस आ'राबी ने सरकारे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم से अपनी नज़्र पूरी करने वाले सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان के मु-तअ़ल्लिक़ इस्तिफ़्सार किया तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब न दिया, उस ने दो तीन बार येही सुवाल किया मगर आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने कोई जवाब न दिया। ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ बयान करते हैं कि इसी अस्ना में, मैं मस्जिद के दरवाज़े से दाख़िल हुवा। उस वक़्त मैं ने सब्ज़ रंग का लिबास पहना हुवा था, जब शहन्शाहे मदीना, क़रारे क़ल्बो सीना صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने मुझे देखा तो दरयाफ़्त फ़रमाया : "वोह कहां है जिस ने नज़्र पूरी करने वालों के मु-तअ़ल्लिक़ पूछा था ?" आ'राबी ने फ़ौरन अ़र्ज़ की : "**या रसूलल्लाह** صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ! मैं यहीं हूं।" तो आप صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने (ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्ह़ा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की त़रफ़ देख कर) इर्शाद फ़रमाया : येह उन्ही लोगों में से हैं जिन्हों ने अपनी नज़्र (मन्नत) को पूरा किया।

(جامع الترمذی، کتاب المناقب با ب، مناقب طلحة بن عبیداللّٰہ، الحدیث:۳۷٦۳، ج٥، ص٤١٤)

आ़जिज़ी व इन्किसारी

ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक मरतबा चन्द लोगों को नमाज़ पढ़ाई। सलाम के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ लोगों की त़रफ़ मु-तवज्जेह हुए और इर्शाद फ़रमाया : "मैं आगे बढ़ने से पहले तुम से इजाज़त लेना भूल गया था क्या तुम मेरे नमाज़ पढ़ाने पर राज़ी हो ?" सब ने अ़र्ज़ की : "जी हां ! हम सब राज़ी हैं और हुज़ूर नबिय्ये पाक, साहिबे लौलाक صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के ह़वारी (दोस्त) की इक़्तिदा में नमाज़ पढ़ने को कौन अच्छा न समझेगा ?" तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : "मैं ने सरकारे नामदार, मदीने के ताजदार صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم को इर्शाद फ़रमाते हुए सुना कि जो शख़्स किसी क़ौम का इमाम बने और वोह उसे पसन्द न करते हों तो उस का नमाज़ पढ़ाना जाइज़ नहीं।" (المعجم الکبیر، الحدیث: ۲۱۰، ج۱، ص۱۱۵)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰہِ تَعَالٰی عَلَیْہِمْ اَجْمَعِیْن की आ़जिज़ी व इन्किसारी पर क़ुरबान जाइये ! ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने येह इस लिये नहीं फ़रमाया था कि आप को लोगों के ए'तिराज़ का ख़दशा था बल्कि आप ने तो एह़तियात़न दरयाफ़्त फ़रमाया था कि किसी को मेरे नमाज़ पढ़ाने पर ए'तिराज़ तो नहीं ? और येह हो भी कैसे सकता है कि जिस को मह़बूबे रब्बे दावर, शफ़ीए़ रोज़े मह़शर صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने जन्नत की ख़ुश ख़बरी दी हो लोग उस की इक़्तिदा को अच्छा न समझें।

प्यारे इस्लामी भाइयो ! सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن तक़्वा व परहेज़ गारी के आ'ला मक़ाम पर फ़ाइज़ थे और वोह हमेशा कोशिश करते कि सुन्नत के ख़िलाफ़ कोई काम न करें। येही वजह है कि उन्हों ने अपनी ज़िन्दगियां क़ुरआनो सुन्नत की तरवीज व इशाअ़त में सर्फ़ कर दीं और इस राह में आने वाली मुश्किलात की कुछ परवाह न की। चुनान्चे,

रिवायते ह़दीस में एह़तियात़

बा'ज़ सह़ाबए किराम رِضْوَانُ اللّٰهِ تَعَالٰی عَلَیْهِمْ اَجْمَعِیْن ने रिवायते ह़दीस को क़ुरआनो सुन्नत की तरवीज़ व इशाअ़त का ज़रीआ़ बनाया और बा'ज़ ने अपनी ज़िन्दगियों को ही इस त़रह़ सरकारे दो आ़लम صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم की सुन्नतों की इत्तिबाअ़ के सांचे में ढाल दिया कि उन के शबो रोज़ के मा'मूलात लोगों को सुन्नतों पर अ़मल की तरग़ीब दिलाया करते। ऐसे सह़ाबए किराम عَلَیْهِمُ الرِّضْوَان अह़ादीस बयान करने में बड़े मोह़तात़ थे मह़ज़ इस डर से कि बयान करने में कुछ कमी बेशी न हो जाए। अगर उन्हें ज़र्रा बराबर शक होता कि येह अल्फ़ाज़ सरवरे दो जहां صَلَّی اللّٰہ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के नहीं हैं तो वोह कभी बयान न करते। चुनान्चे,

पीराना साली में ह़ज़रते अनस बिन मालिक رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰی عَنْهُ फ़रमाया करते कि अगर मुझे ग़-लत़ी का अन्देशा न होता तो मैं ज़रूर अह़ादीस बयान करता।

(سنن الدارمی، مقدمه، باب اتقاء الحدیث، الحدیث:۲۳۵، ج۱، ص۸۸)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का शुमार भी उन जलीलुल क़द्र सह़ाबए किराम عَلَیْہِمُ الرِّضْوَان में होता है जिन्हों ने बहुत कम अह़ादीस रिवायत की हैं। चुनान्चे,

ह़ज़रते अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐनी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْقَوِی (मु-तवफ़्फ़ा 855 हि.) आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ के मु-तअ़ल्लिक़ शर्ह़े अबू दावूद में फ़रमाते हैं कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ से कुल अड़तीस ﴿38﴾ अह़ादीसे मुबा-रका मरवी हैं इन में से तीन अह़ादीस बुख़ारी शरीफ़ में और चार मुस्लिम शरीफ़ में हैं।

(شرح ابی داؤد للعینی، کتاب الصلاۃ، باب ما یستر المصلی، الحدیث:٦٦٦،ج٣، ص٢٤٢)

सफ़रे आख़िरत

जंगे जमल के दौरान ग्यारह जुमादल उख़्रा सि. 36 हि. (बरोज़ जुमए़रात) मरवान बिन ह़कम ने आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की टांग में एक तीर मारा जिस से ख़ून की रग बुरी त़रह़ कट गई, जब उस का मुंह बन्द करते तो टांग फूल जाती और अगर छोड़ते तो कसरत से ख़ून बहने लगता। पस आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने इर्शाद फ़रमाया : इस को ऐसे ही छोड़ दो येह **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ के तीरों में से एक तीर है या'नी मेरी शहादत इसी के साथ मुक़द्दर की गई है। बस इसी के सबब 60 या 64 साल की उ़म्र में आप इस वत़ने इक़ामत को छोड़ कर वत़ने अस्ली में जा बसे।

(الاستیعاب فی معرفۃ الاصحاب، طلحۃ بن عبید اللّٰہ التیمی، ج٢، ص٣٢٠. ملتقطاً)

सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم का ख़िराजे तह़सीन :

अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم को जब ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ की शहादत की ख़बर मिली तो फ़ौरन आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ज-सदे ख़ाकी के पास तशरीफ़ लाए, सुवारी से उतर कर ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के पास बैठ गए और आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ के नूरानी चेहरे और दाढ़ी मुबारक से गर्दो ग़ुबार साफ़ कर के इन्तिहाई दर्द भरे अन्दाज़ में फ़रमाया : ''ऐ काश ! येह दिन देखने से बीस साल पहले ही मैं इस दुन्या से चला जाता ।''

(تاریخ مدینة دمشق، الرقم ۲۹۸۳ طلحة بن عبید اللّٰه، ج۲۵، ص۱۱۵.المعجم الکبیر، الحدیث:۲۰۲، ج۱، ص۱۱۳)

क़ातिल को जहन्नम की ख़बर :

त़-बक़ाते इब्ने सा'द में है कि ह़ज़रते सय्यिदुना त़ल्हा बिन उ़बैदुल्लाह رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ का क़ातिल अमीरुल मुअमिनीन ह़ज़रते सय्यिदुना अ़लिय्युल मुर्तज़ा كَرَّمَ اللّٰهُ تَعَالٰى وَجْهَهُ الْكَرِيْم की ख़िदमत में ह़ाज़िर हुवा और अन्दर आने की इजाज़त त़लब की तो आप رَضِیَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُ ने लोगों से इर्शाद फ़रमाया : ''इसे जहन्नम की ख़बर दे दो ।''

(الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الرقم٤٧ طلحة بن عبیداللّٰه، ج۳، ص١٦٩)

एक क़ब्र से दूसरी क़ब्र में :

दा'वते इस्लामी के इशाअ़ती इदारे मक-त-बतुल मदीना की मत़्बूआ़ 346 सफ़ह़ात पर मुश्तमिल किताब, ''**करामाते सह़ाबा**'' सफ़ह़ा

118 ता 120 पर है कि शहादत के बा'द आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ को बसरा के क़रीब दफ़्न कर दिया गया मगर जिस मक़ाम पर आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की क़ब्र शरीफ़ बनी वोह नशीब में था इस लिये क़ब्र मुबारक कभी कभी पानी में डूब जाती थी। आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने एक शख़्स को बार बार मु–तवातर ख़्वाब में आ कर अपनी क़ब्र बदलने का हुक्म दिया। चुनान्चे उस शख़्स ने ह़ज़रते **अ़ब्दुल्लाह** बिन अ़ब्बास رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا से अपना ख़्वाब बयान किया तो आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ ने दस हज़ार दिरहम में एक सह़ाबी رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मकान ख़रीद कर उस में क़ब्र खोदी और ह़ज़रते त़ल्ह़ा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ की मुक़द्दस लाश को पुरानी क़ब्र में से निकाल कर उस क़ब्र में दफ़्न कर दिया। काफ़ी मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद आप رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُ का मुक़द्दस जिस्म सलामत और बिल्कुल ही तरो ताज़ा था। (اسد الغابة، طلحة بن عبيد الله التيمى، ج٣، ص٨٧)

प्यारे इस्लामी भाइयो ! येह वाक़िआ़ ज़िक्र करने के बा'द शैखुल ह़दीस ह़ज़रते अ़ल्लामा अ़ब्दुल मुस्त़फ़ा आ'ज़मी عَلَیْہِ رَحْمَۃُ اللّٰہِ الْغَنِی फ़रमाते हैं कि ग़ौर फ़रमाइये कि कच्ची क़ब्र जो पानी में डूबी रहती थी एक मुद्दत गुज़र जाने के बा वुजूद एक वली और शहीद की लाश ख़राब नहीं हुई तो ह़ज़राते अम्बिया عَلَیْہِمُ الصَّلٰوۃُ وَالسَّلَام ख़ुसूसन हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم के मुक़द्दस जिस्म को क़ब्र की मिट्टी भला किस त़रह़ ख़राब कर सकती है ? येही वजह है कि हुज़ूर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَ اٰلِہٖ وَسَلَّم ने इर्शाद फ़रमाया :

اِنَّ اللّٰهَ حَرَّمَ عَلَى الْاَرْضِ اَنْ تَاكُلَ اَجْسَادَ الْاَنْبِيَاء (مشكوة، ص١٢١)

(या'नी **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने ज़मीन पर अम्बियाए किराम عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام के जिस्मों को खाना ह़राम फ़रमा दिया है)

इसी त़रह़ इस रिवायत से इस मस्अले पर भी रोशनी पड़ती है कि शु-हदाए किराम अपने लवाज़िमे ह़यात के साथ अपनी अपनी क़ब्रों में ज़िन्दा हैं क्यूं कि अगर वोह ज़िन्दा न होते तो क़ब्र में पानी भर जाने से उन को क्या तक्लीफ़ होती ? इसी त़रह़ इस रिवायत से येह भी मा'लूम हुवा कि शु-हदाए किराम ख़्वाब में आ कर ज़िन्दों को अपने अह़वाल व कैफ़िय्यात से मुत्त़लअ़ करते रहते हैं क्यूं कि **अल्लाह** عَزَّوَجَلَّ ने इन को येह क़ुदरत अ़त़ा फ़रमाई है कि वोह ख़्वाब या बेदारी में अपनी क़ब्रों से निकल कर ज़िन्दों से मुलाक़ात और गुफ़्त-गू कर सकते हैं।

अब ग़ौर फ़रमाइये कि जब शहीदों का येह ह़ाल है और इन की जिस्मानी ह़यात की येह शान है तो फिर ह़ज़राते अम्बियाए किराम صَلَّى اللّٰه تَعَالٰى عَلَيْهِ وَ اٰلِهٖ وَسَلَّم عَلَيْهِمُ الصَّلٰوةُ وَالسَّلَام ख़ास कर हुज़ूर सय्यिदुल अम्बिया की जिस्मानी ह़यात और इन के तसर्रुफ़ात और इन के इख़्तियार व इक़्तिदार का क्या आ़लम होगा। (करामाते सह़ाबा, स. 118 ता 120)

अल्लाह عَزَّوَجَلَّ की उन पर रह़मत हो और उन के सदक़े हमारी मग़्फ़िरत हो।

यारानेनबी का वस्फ़ किस से हो अदा
एक एक है इन में नाज़िमे नज़्मे हुदा
पाए कोई क्यूंकर उस रुबाई का जवाब
ऐ अहले सुख़न जिस का मुसन्निफ़ हो ख़ुदा

(ज़ौक़े ना'त)

थे तो आबा वोह तुम्हारे ही, मगर तुम क्या हो ?

सफ़्ह़ए दह्र से बात़िल को मिटाया किस ने ?

नौए़ इन्सां को ग़ुलामी से छुड़ाया किस ने ?

मेरे का'बे को जबीनों से बसाया किस ने ?

मेरे कु़रआन को सीनों से लगाया किस ने ?

थे तो आबा वोह तुम्हारे ही, मगर तुम क्या हो ?

हाथ पर हाथ धरे मुन्तज़िरे फ़र्दा हो !

मन्फ़अ़त एक है इस क़ौम की, नुक़्सान भी एक

एक ही सब का नबी, दीन भी, ईमान भी एक

ह़-रमे पाक भी, अल्लाह भी, कु़रआन भी एक

कुछ बड़ी बात थी होते जो मुसल्मान भी एक !

مآخذ و مراجع

القرآن الکریم، کلام باری تعالیٰ.

ترجمۂ قرآن کنز الایمان ، اعلی حضرت امام احمد رضا بن نقی علی خان ۱۳٤۰ھ.

خزائن العرفان، صدر الافاضل نعیم الدین مراد آبادی۱۳٦۷ھ.

الکشاف ، جار اللّٰہ محمود بن عمرو الزمخشری ۵۳۸ھ، دار الکتب العربی بیروت.

صحیح مسلم، امام مسلم بن حجاج نیشا پوری ۲٦۱ھ، دار المغنی.

سنن الترمذی، امام محمد بن عیسٰی الترمذی ۲۷۹ھ، دار الفکر بیروت.

المستدرك علی الصحیحین، امام محمد بن عبد اللّٰہ الحاکم ٤۰۵ھ، دار المعرفۃ بیروت.

مسندابی یعلی، ابو یعلی احمد الموصلی ۳۰۷ھ، دار الکتب العلمیۃ.

موسوعۃ لابن الدنیا، امام ابو بکر عبد اللّٰہ بن محمد المعروف بابن ابی الدنیا ٤۸۱ھ، المکتبۃ العصریۃ بیروت.

شعب الایمان للبیہقی، الامام احمد بن الحسین البیہقی ٤۵۸ھ، دار الکتب العلمیۃ.

المعجم الکبیر، الحافظ سلیمان بن احمد الطبرانی ۳٦۰ھ، دار احیاء التراث العربی.

اَلتَّرغیب وَالتَّرهیب، امام زکی الدین عبد العظیم المنذری ٦۵٦ھ، دارابن کثیر بیروت.

فیض القدیر شرح الجامع الصغیر، علامہ محمد عبد الرء وف المناوی ۱۰۳۱ھ، دار الکتب العلمیۃ.

شرح ابی داؤد للعینی، علامہ بدر الدین عینی ۸۵۵ھ، مکتبۃ الرشد ریاض.

دلائل النبوۃ للبیہقی، الامام احمد بن الحسین البیہقی ٤۵۸ھ، دار الکتب العلمیۃ.

الزھد للامام احمد بن حنبل، الامام احمد بن حنبل ۲٤۱ھ، دار الغد الجدید.

الطبقات الکبریٰ لابن سعد، الامام محمد بن سعد البصری ۲۳۰ھ، دار الکتب العلمیۃ.

الریاض النضرۃ، امام احمد بن عبد اللّٰہ المحب الطبری ٦۹٤ھ، دار الکتب العلمیۃ.

تاریخ مدینۃ دمشق، الحافظ ابو القاسم علی بن حسن الشافعی، المعروف بابن عساکر ۵۷۱ھ، دار الفکر.

اسد الغابۃ، امام ابو الحسن علی بن محمد الجزری ٦۳۰ھ، دار احیاء التراث العربی.

الاستیعاب، امام ابو عمرو یوسف بن عبداللہ ٤٦۳ھ، دار الکتب العلمیۃ.

معرفۃ الصحابۃ، امام ابو نعیم احمد بن عبد اللہ ٤۳۰ھ، دار الکتب العلمیۃ.

تاریخ اسلام للامام الذھبی، امام محمد بن احمد بن عثمان الذھبی۷٤۸ھ، دار الکتب العربی.

قوت القلوب، شیخ ابو طالب مکی۳۸٦ھ، دار الکتب العلمیۃ.

کراماتِ صحابہ ، شیخ الحدیث حضرت علامہ عبد المصطفیٰ اعظمی ۱٤۰٦ھ، مکتبۃ المدینۃ.

فیضانِ سنّت ، امیر اہلسنت حضرت علامہ مولانا محمد الیاس قادری دامت برکاتہم العالیہ، مکتبۃ المدینۃ.